## तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सज़्मेलन का शुभारंभ

# परिवर्तन में विवेक जरूरी : आचार्य महाश्रमण

**सरदारशहर 14 अगस्त, 2010**

आचार्यश्री महाश्रमण ने जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सज़्मेलन के शुभारज़्भ अवसर पर सज़्मेलन के थीम वाक्य 'करो चिंतन, कैसे लाएं परिवर्तन' को विवेचित करते हुए कहा कि परिवर्तन में विवेक जरूरी है। जो परिवर्तनीय है उसको बदलना चाहिए और जो अपरिवर्तनीय है उसके बदलाव पर शक्ति महत्वपूर्ण अर्थ लिए हुए हैं। मैं जहां हूं वहां परिष्कार शब्द महत्वपूर्ण है या नहीं इस पर चिंतन करें। परिष्कार करते हुए आदमी कितना उपर उठ सकता है।

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि महासभा समाज की मां है। मां अपने बेटे को ज़ुब लाड प्यार देती है पर समय आने पर चांटा भी मार देती है। जो उस चांटे को सहन कर परिष्कार कर लेता है वह विकास करता है। स्थानीय सभाओं को इस बात पर ध्यान देना है कि स्थानीय स्तर पर जिन समस्याओं का समाधान न हो उनको महासभा को समाधान के लिए सौंप दें। यहां समाधान न मिलने पर संतों के पास या हमारे पास आयें। सीधे सभा संस्थाओं की समस्याएं हमारे पास न आये तो व्यवस्था सुन्दर रह सकती है। उन्होंने सूई से टूटे दिलों को जोड़ने की, कंघे से उलझनों को सुलझाने की, अगरबती से सरदारशहर की सौरभ फैलाने की ओर मोमबत्ती से ज्ञान का प्रकाश फैलाने की प्रेरणा लेने की चर्चा करते हुए कहा कि सभा संस्थाओं के पदों पर आने वाले लोगों का नशा मुक्त होना जरूरी है, चुनाव से पहले ही इस आशय का शपथ पत्र करवा लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि महासभा और स्थानीय सभा के कार्यकर्त्ताओं में श्रद्धा, समर्पण और निष्ठा के साथ है। जिसमें यह भान होते हैं वह विकास कर सकता है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि तेरापंथी महासभा सबसे पुरानी और महत्वपूर्ण संस्था है। इससे पूरा समाज जुड़ा हुआ है। यह चिंतन की बात करती है। यह बहुत जरूरी भी है, चिंतन यानी विचार, विचार तलवार की धार से भी अधिक तेज होते हैं, विचार से नया जीवन मिलता है। उन्होंने सज़्मेलन की थीम वाक्य को प्रस्तुत करते हुए कहा कि परिवर्तन के दृढ़ इच्छा शक्ति की जरूरत होती है। वृक्ष इच्छाशक्ति से पानी को 357 फीट उपर उठा देता है तो मनुष्य क्यों परिवर्तन नहीं कर सकता। मनुष्य को अपनी इच्छा शक्ति को संजोना होगा। उन्होंने तेरापंथ के परिवर्तनों की चर्चा करते हुए कहा कि तेरापंथ का इतिहास परिवर्तन का साक्षी है, सर्वप्रथम आचार्य भिक्षु ने क्रांतिकारी परिवर्तन किया। जो क्रांति करता है उसे बहुत सहना होता है और अनजानी राहों पर चलना होता है। दूसरा परिवर्तन जयाचार्य के युग में हुआ। उस समय सुधार मूलक परिवर्तन हुआ। तीसरा परिवर्तन आचार्य तुलसी ने किया। इस युग में क्रांति भी हुई सुधार भी हुआ। आचार्य तुलसी के साथ आचार्य महाप्रज्ञ निरंतर जुड़े हुए थे। दोनों चिंतन मेधा और साहस के कारण तेरापंथ बहुआयामी विकास कर रहा है।

महासभा के प्रभारी शासन गौरव मुनि धनंजयकुमार ने कहा कि परिवर्तन तभी होगा जब जड़ों को सींचा जायेगा। ज्ञानशाला, उपासक, बारह व्रती श्रावकों का निर्माण और कर्मणा जैन यह समाज की जड़े हैं। इन पर ध्यान देना

जड़ों को सींचना है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता व्यसनमुक्त रहे यह आवश्यक है, जो स्वयं सही नहीं है, चरित्र निष्ठ नहीं है तो वह कैसे जड़ों को सीचेंगा और कैसे परिवर्तन होगा।

मुनि नीरजकुमार ने मंगल संगान से प्रारंभ हुआ इस सज्मेलन में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने स्वागत भाषण देते हुए सज्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की। आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने आगंतुकों का स्वागत किया। कालू कन्या महाविद्यालय के लिए 51 लाख के अनुदान देने वाले परिवार की ओर से कुमुद बच्छावत ने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन महासभा के मंत्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

---

## 15 अगस्त पर विशेष संदेश

15 अगस्त का दिन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिवस है। पराधीनता की स्थिति में श्वास लेने वाला हिन्दुस्तान इस दिन स्वाधीनता की श्वास लेने लगा था। परतंत्रता समाप्त हुई और देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता का अपना आनन्द होता है। परन्तु वह स्वछंदता न बन जाये, इस जागरूकता की अपेक्षा है। भारत ने विकास किया है। उसका संचालन लोकतांत्रिक प्रणाली से हो रहा है। लोकतंत्र में भी अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा होना आवश्यक है। उसके बिना प्रजातंत्र कल्याणकारी नहीं होता।

भारत ऋषियों का देश है। यहां अतीत में भी महर्षि हुए हैं। आज भी विभिन्न संत तपस्या कर रहे हैं, देश वासियों को पथदर्शन दे रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी 20वीं सदी के भारत के महान संत थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और उसके द्वारा जन-जन में संयम और नैतिकता का संदेश फैलाने का प्रयत्न किया। अणुव्रत की आत्मा संयम है। उसका घोष है संयमः खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है। संयम से अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज अपेक्षा है ऐसे नैतिकता एवं संयम की आवाज को बुलंद करने वाले प्रयासों की। जब ऐसे प्रयास होंगे तो स्वतंत्र भारत की जनता राह नहीं भटकेगी और स्वतंत्रता को सही मायने में जी सकेगी।

**सरदारशहर** **- आचार्य महाश्रमण**

## जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का समापन

**सरदारशहर 14 अगस्त, 2010**

पांच दिवसीय चलने वाले शिविर का समापन आज आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में संपन्न हुआ। शिविर की रिपोर्ट डॉ. ललित किशोर ने प्रस्तुत की। यह पांच दिवसीय शिविर मुनि किशनलाल के निर्देशन में सक्रियता से संचालन हुआ। मुनि किशनलाल ने व्यक्तित्व परिवर्तन के बाधक तत्वों का निवारण करते हुए और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले तत्वों को बताया।

इस शिविर में कोलकाता, दिल्ली, मध्यप्रदेश, राजस्थान के 35 संभागियों ने भाग लिया, शिविर समापन पर आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्तित्व विकास के बिना जीवन असंभव है। हर मनुष्य को अपने

व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए और जीवन विज्ञान की उपयोगिता को समझते हुए जीवन विज्ञान के द्वारा व्यक्तित्व विकास का निर्माण हो सकता है, समय-समय पर जीवन विज्ञान के शिविर आयोजित होते रहें जिससे समाज के लोगों को लाभ मिलता रहे।

## पर्यावरण संरक्षण में सौर ऊर्जा का उपयोग महत्वपूर्ण

**– आचार्य महाश्रमण**

**सरदारशहर 14 अगस्त, 2010**

सूर्य को भगवान की उपमा दी गई है। भगवान के रूप को हम नहीं देख सकते लेकिन अजस्र उर्जा के स्रोत के रूप में हम सूर्य के महत्व को प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। सूर्य से प्राप्त उर्जा एक तरह से मनुष्य व सभी प्राणियों के लिए जीवन रेखा है। यह उद्‌गार आचार्यश्री महाश्रमण ने सेंटर फोर सोलर एनर्जी के तत्वावधान में सौर उर्जा जन जागरण अभियान के उद्‌घाटन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आंदोलन प्रयावरण शुद्धि की बात करता है। इस दृष्टि से भी सौर ऊर्जा का महत्व है। विद्यालय में इस प्रकार के कार्यक्रम करने का अपना महत्व है। इस विद्यालय ने विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल की है। अब मूल्यों के विकास की दृष्टि से भी यह विद्यालय उदाहरण बने तो विशिष्ट बात होगी।

सेन्टर फॉर सोलर एनर्जी के द्वारा स्थानीय दूगड़ विद्यालय में सौर उर्जा के उपयोग व लाभ को दर्शाते हुये चित्र प्रदर्शनी लगाई गई है। अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलाल ने कहा कि अणुव्रत संस्थाओं व कार्यकर्ताओं को भी इस कार्यक्रम से जुड़कर ऊर्जा संरक्षण के लिए माहौल बनाना चाहिए।

सेन्टर फॉर सोलर एनर्जी के अध्यक्ष श्री मोहनलाल पींचा ने अभियान के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भारत की भौगोलिक स्थिति सौर ऊर्जा के उपयोग की दृष्टि से बहुत ही सकारात्मक है। हमारा उद्‌देश्य है कि जनता में जागरूकता आये। सौर ऊर्जा का उपयोग बढ़े।

कार्यक्रम के प्रारज़्भ में गांधी विद्या मन्दिर के अध्यक्ष श्री कनकमल दूगड़ ने आचार्यश्री का स्वागत किया एवं विद्यालय की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। जाने-माने वैज्ञानिक श्री बजरंगलाल सोनी ने बताया कि विद्यालय ने राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार जीते हैं एवं यहां की विज्ञान प्रयोगशाला में विशिष्ट प्रतिष्ठा अर्जित की है। आभार ज्ञापन गांधी विद्या मन्दिर के उपाध्यक्ष श्री सज़्पत नाहटा ने किया एवं संचालन श्री संचय जैन ने किया। कार्यक्रम में सरदारशहर के वयोवृद्ध गांधीवादी कार्यकर्ता मोहनलाल जैन, अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा, दूगड़ विद्यालय के प्रधानाचार्य योगेश जोशी, अणुव्रत समिति सरदारशहर के अध्यक्ष डालचन्द चिण्डालिया, कवियित्री श्रीमती वीणा जैन (पींचा) श्रीमती मंजुला गुजरानी, हेमन्त दुगड़ सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

**– शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)